%%A. D. 1190 ― 1435

%%or Śaka 1112 – 1357

%% p. 703

NO. 377

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Simhāchalaṃ<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 1126; A. R. No. 352 of 1899;

I. M. P. Vol. III, P. 1685, No. 180 )

Ś. 1299

(१।) स्वस्ति श्री ।। शाक(का)व्दे निधि-रत्न-वाहु धर[णी] संख्यान्विते

फाल्गुणे मासे विष्णुतिथौ सितो-

(२।) दयदिने श्रीसि[ं]हशैलेशितुः [।] पूपान धूपयुगे निवेदितुमतिप्रीत[ः]

शुभाषाप्तये प्रादा-

(३।) त् पात्रपदोन्नतो गुणनिधि[ः] श्रीधर्म्मदासः प्रभुः [।।] श्रीशक-

वरुषंवुलु १२९९ गुनेंटि

(४।) फाल्गुन विमल तृतीया सोमवारमुनांडु<2> कलिग[प]रीक्ष पात्र

श्रीधम्मदासजीय्यन

(५।) तनकु अभीष्टात्थसिद्धिगा श्रीनरसि[ं]हनाथुनि र्रेपटि-

[धू]पावसरमंदु शशि[व]डालु<3>

(६।) १२ अरगिपानु [मापटि धु]पावस[र]म दु [मंडा]<4> अर २४

अरगिपान श्री-

<1. In the fiftieth niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date is the 1st February, 1378 A. D., Monday.>

<3. The term “शशिवड़ा” is still used among the Oriyas.>

<4. The term “मंडा” is still in vogue among the Oriyas.>

%%p. 704

(७।) भंडारमंदु पद्मनिधि गंडमाडलु २० पेट्टि समर्प्पण शेशि

अरगिचिन वे-

(८।) नकनु नव्यालकु शशिवडा १ [म]ंडा १ एकाकि श्रीवैष्ण-

वुलकु शशिव[ं]डा १

(९।) मंडा १ सु[धा]रुलकु शशिवडा २ मंडा २ ई प्रकारमंदु प्रयमु

(१०।) र्वोगानु उंन्न तवटु भंडारमु शेशइ आचंद्रार्क्कस्थाइगां वेटेनु ई धर्म्म-

(११।) बु श्रीवैष्णव रक्ष(क्ष) श्री श्री श्री ।। ‒

(१२।)

(१३.)